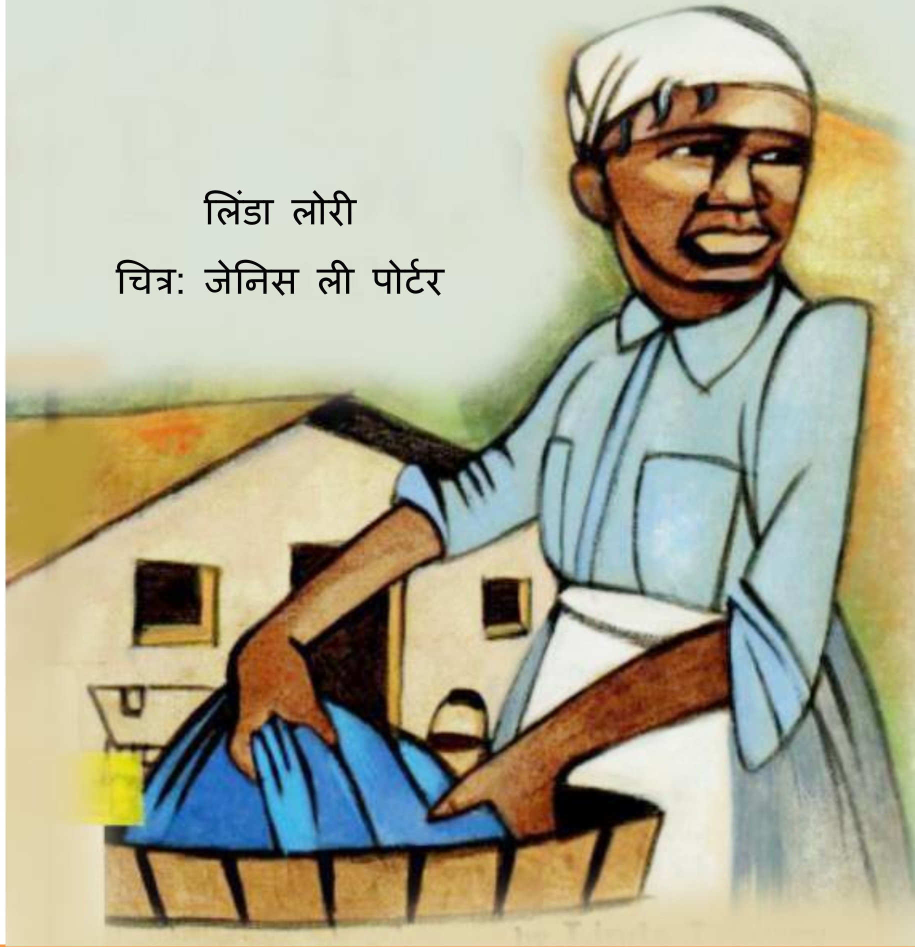
आंटी क्लारा ब्राउन

ऑफिशियल पायनियर

लिंडा लोरी

चित्र: जेनिस ली पोर्टर



सेंट लुइस, मिसौरी

1859

क्लारा ब्राउन ने सूखी मछलियों के ड्रमों के पीछे से अपना रास्ता बनाया.

वो कपास की गांठों के पास से गुज़री.

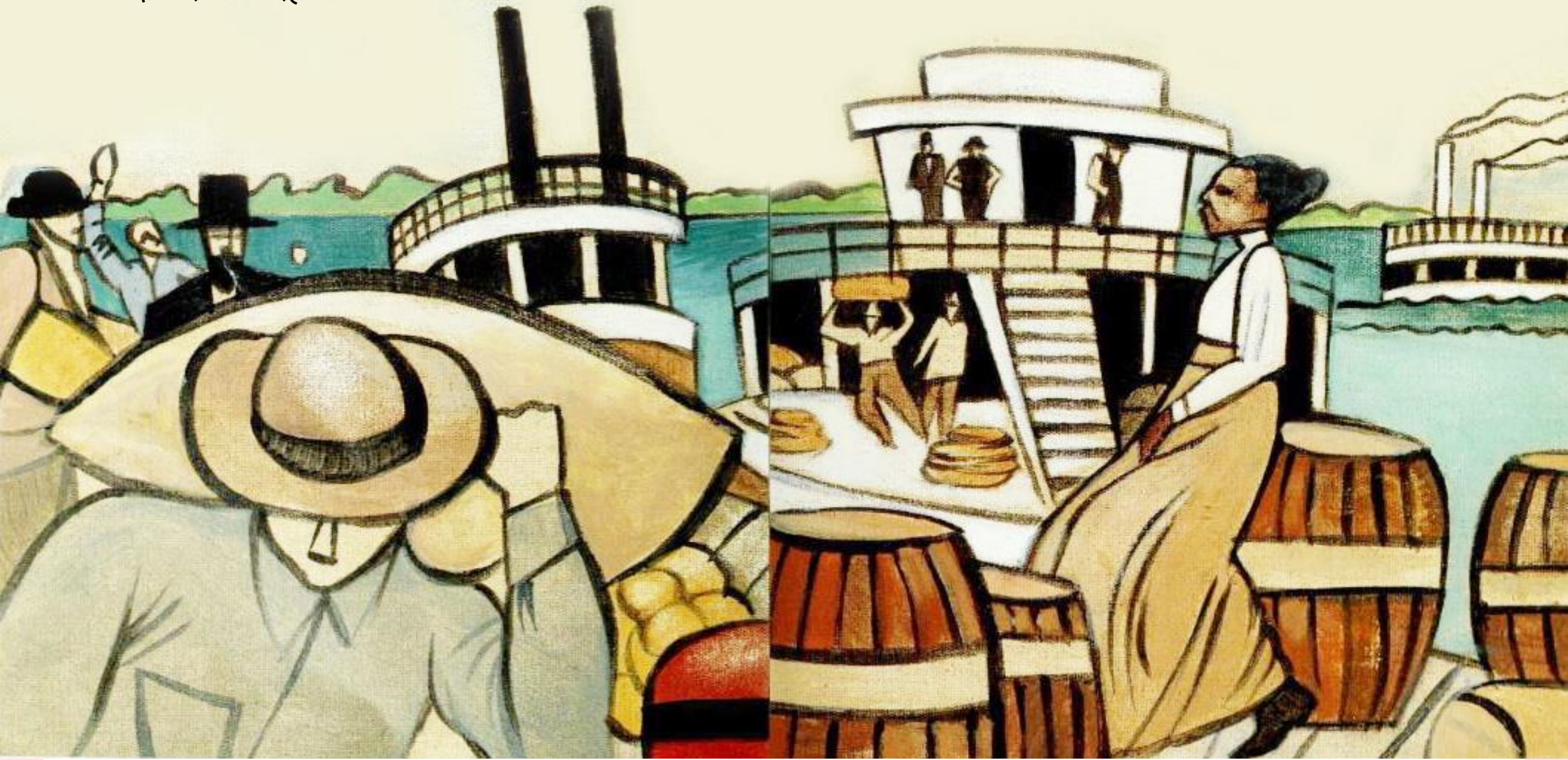
सब जगह, लोग नावों से बोरे और बक्से उतारकर गोदी पर फेंक रहे थे.

वे अपना सारा सामान मिसिसिपी नदी से नीचे सेंट लुइस ले आए थे.

जल्द ही वे अपने सामान को ढके हुए वैगनों में लोड करेंगे और वे पश्चिम की ओर जाएंगे.

रॉकी माउंटेन में सोने की खोज की कहानियां चारों ओर फ़ैल रही थीं.

सभी लोग अमीर बनने की उम्मीद कर रहे थे.



क्लारा अजनबियों के एक समूह के पास गई.

उसने पूछा कि क्या वे कोलोराडो जा रहे थे.

एक बड़ा, गोरा आदमी पीछे मुड़ा.

उसने क्लारा से पूछा कि एक औरत, गोदी पर क्या कर रही थी?

और वो भी काली औरत?

उसने औरत को ऊपर देखा.

उसने उसे नीचे देखा.

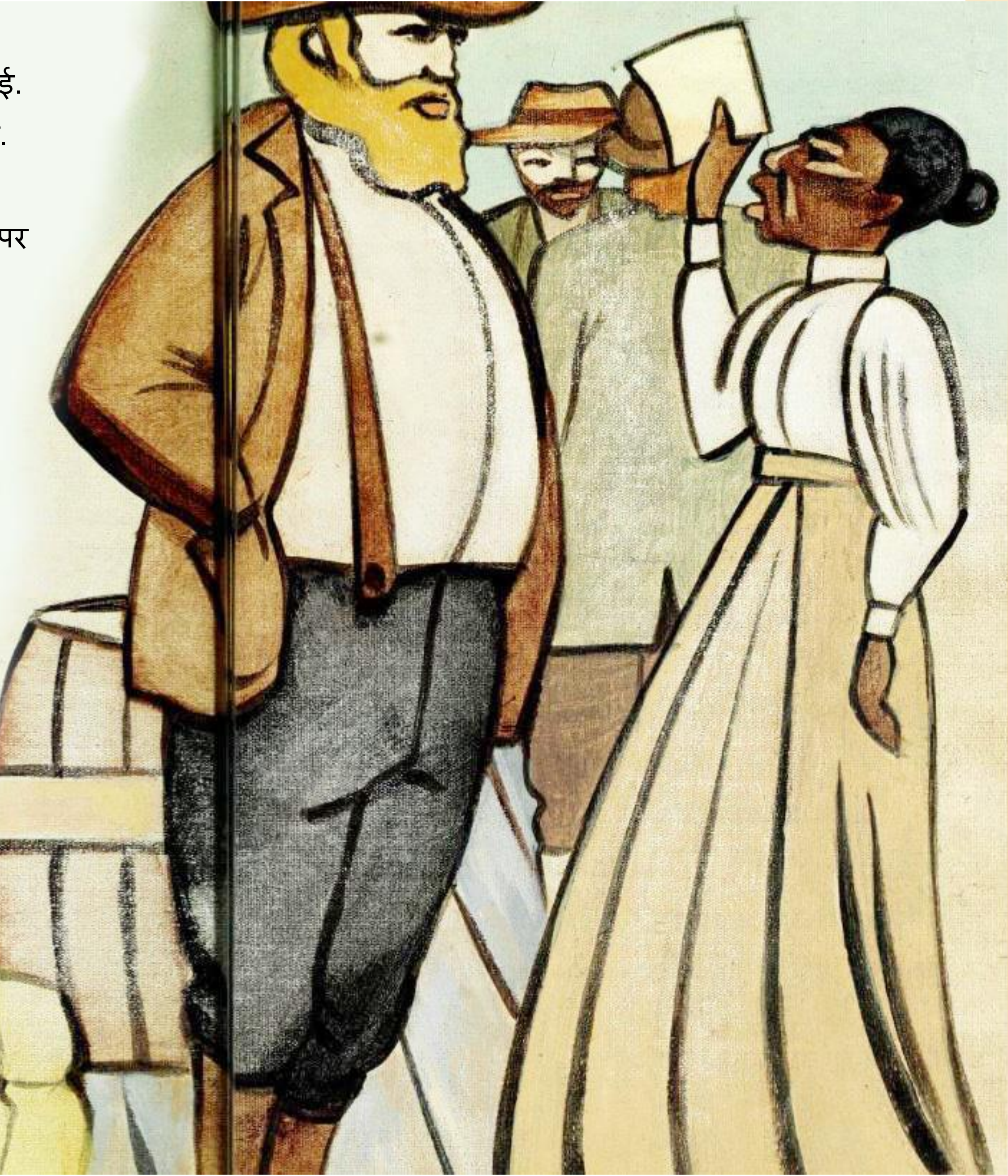
फिर उसने क्लारा से कहा कि वो मिसौरी नहीं छोड़ सकती थी.

क्योंकि क्लारा एक गुलाम थी.

क्लारा ने गर्व से अपने हाथ में पकड़े कागजात लहराए.

उसने अपना सर उठाकर कहा कि वो अब गुलाम नहीं थी.

वो क्लारा ब्राउन थी, और उसके हाथ में उसकी स्वतंत्रता के कागज़ात थे.



सभी लोगों ने क्लारा को घूरा.

1859 में, बहुत से गुलामों को मुक्त नहीं किया गया था.

लेकिन जब क्लारा के आखिरी मालिक की मृत्यु हुई, तो फिर क्लारा ने अपनी स्वतंत्रता खरीदी.

उसके लिए उसे बहुत सारा पैसा देना पड़ा और बहुत सारा काम भी करना पड़ा.

लेकिन 57 साल की क्लारा, अब एक आजाद औरत थी.

क्लारा ने लोगों से कहा कि उसके पास अब कोलोराडो जाने के लिए पैसे नहीं बचे थे.

लेकिन वो उनके लिए रास्ते में काम करेगी.

उन मर्दों को देखकर ऐसा लग रहा था कि वे अमीर बनने का सपने सोचने में बहुत व्यस्त थे.

वहां पर उनका खाना कौन बनाएगा?

उनके कपड़े कौन धोएगा.

क्लारा ने कहा कि वो उनका खाना पकाएगी और उनके कपड़े धोएगी.

यह सुनकर उन लोगों के चेहरों पर मुस्कान खिल उठी.



फिर उन लोगों के समूह का इंचार्ज क्लारा की ओर बढ़ा.

"मेरा नाम कर्नल वड्सवर्थ है," उसने कहा.

उसी समय, क्लारा ब्राउन को पता चल गया कि वो भी पश्चिम की ओर जरूर जाएगी.

क्लारा अपना कपड़े धोने के टब और बॉयलर पैक करने घर गई.

उसकी सबसे अच्छी दोस्त, बैकी जॉनसन ने उसकी मदद की.

बैकी, क्लारा के लिए बहुत उत्साहित थी.

खदान मज़दूर सोने के खोज में पश्चिम जाकर अमीर बन रहे थे.

क्या क्लारा भी वहां जाकर अमीर बनेगी?

क्लारा की आंखों में अचानक आंसू आ गए.

उसके लिए अमीर होना अच्छा होगा.

लेकिन वो असल में एक और कारण से कोलोराडो जा रही थी.

उसे उम्मीद थी कि उसकी बेटी एलिजा जेन वहां होगी.

क्लारा एक बार सिर्फ फिर से, अपनी बेटी का प्यारा चेहरा देखना चाहती थी.



क्लारा को कई बार अलग-अलग गुलाम मालिकों को बेचा गया था.

वो वर्जीनिया, कैंटकी, कंसास और मिसौरी में रह चुकी थी.

पच्चीस साल पहले, कैंटकी के मालिक ने एलिजा जेन को बेच दिया था.

तब वो केवल 10 साल की थी.

क्लारा ने उसे फिर कभी नहीं देखा था.

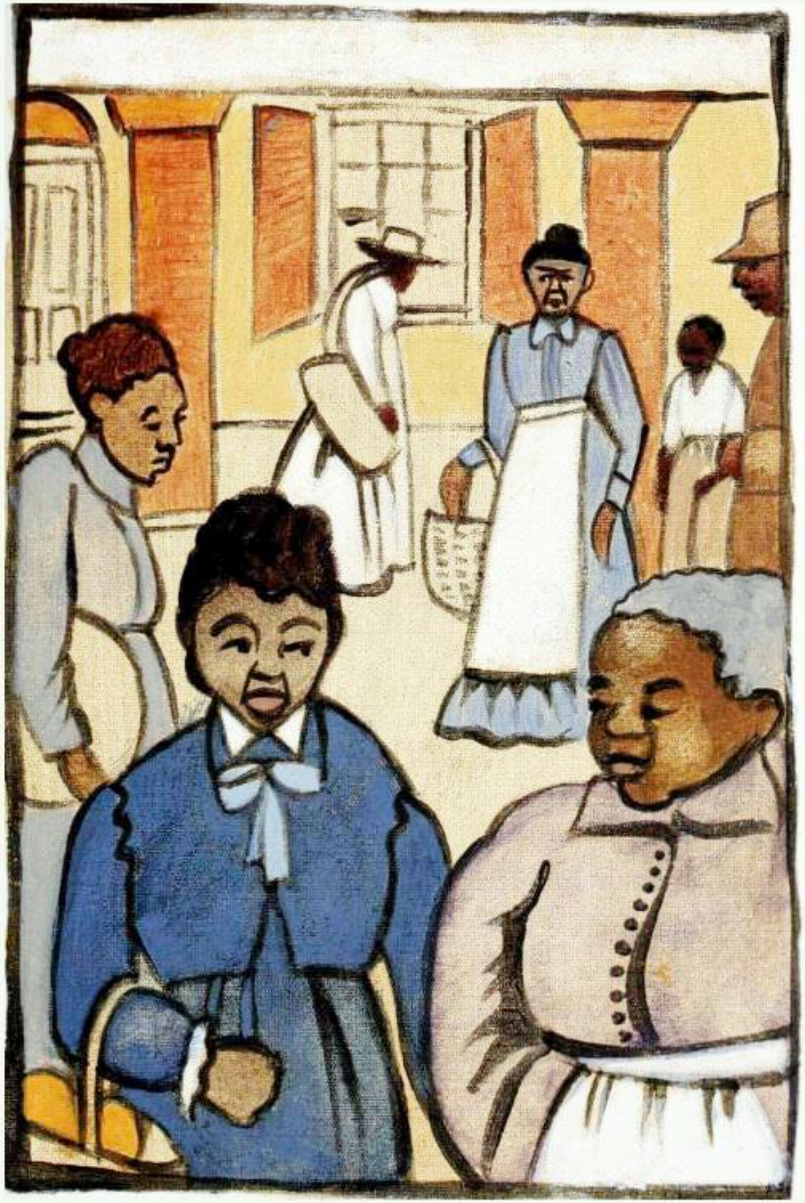
जिस क्षण क्लारा 1856 में मुक्त हुई, उसने एलिजा की तलाश शुरू कर दी थी.

उसने सभी लोगों से पूछा कि क्या उन्होंने उसकी बेटी को कहीं देखा था.

वो अपनी बेटी को पहचानने की उम्मीद में, पास से गुजरते लोगों के चेहरों को घूरती थी.

इसलिए क्लारा पश्चिम की ओर जा रही थी.

उसने सोचा कि एलिजा के मालिक उसे वहां ले गए होंगे.





ज्यादातर मज़दूर मर्द अकेले जा रहे थे.

कुछ अपनी पत्नियों को भी साथ लाए थे.

क्लारा ने सबका ख्याल रखा.

हर दिन, वो कैम्प-फायर पर खाना पकाती थी.

वो सूखने के लिए भैंस का मांस लटकाती थी.

जब लोग बीमार होते, तो क्लारा चाय पिलाकर और जड़ी-बूटियों से उनका इलाज करती थी.

फिर भी, क्लारा के साथ कैसे पेश आना है यह उन मर्दों को नहीं पता था.

अगली सुबह, जोर से चिल्लाने और बैलों के खर्राटों के साथ, वैगन ट्रेन बाहर निकली.

हर वैगन में ऊंचाई तक सामान लदा था.

खुदाई के लिए भारी उपकरण थे.

आटे और चावल के बोरे, सेब की टोकरियां, चाय के डिब्बे थे.



क्लारा को वैगन में सवारी करने की अनुमति नहीं थी.

वो प्रतिदिन बैलों के साथ-साथ चलती थी.

रात में, मर्द बहस करते थे कि क्या गुलामों को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए.

वो इस बात पर भी बहस करते, कि क्लारा को कहाँ सोना चाहिए.

क्या उसे अन्य महिलाओं के साथ वैगनों में सोना चाहिए?

या उसे बाहर मवेशियों के साथ सोना चाहिए?

पुरुषों को यह नहीं पता था कि क्लारा की मां एक चेरोकी इंडियन थी.

अगर उन्हें यह पता चलता तो क्लारा के लिए वो और भी बुरा होता.

रात को क्लारा किसी वैगन के नीचे जमीन पर सो जाती थी.

वो 680 मील पैदल चली!

1859 के जून में, वैगन ट्रेन डेनवर, कोलोराडो पहुंची.

क्लारा थकी हुई थी, लेकिन वो काफी रोमांचित थी.

यहां कोलोराडो में, वो अपने लिए एक नया जीवन शुरू करेगी.



सेंट्रल सिटी, कोलोराडो

1859

डेनवर, सोने के खनन को लेकर अफवाहों से भरा था.

लोग "सेंट्रल सिटी" को गोल्ड कंट्री का दिल बुलाते थे.

लेकिन डेनवर, "सेंट्रल सिटी" से बहुत दूर था.

वहां पहुँचने के लिए दो सप्ताह, पहाड़ी सड़कों पर 40 मील दूर की खतरनाक यात्रा करनी होती थी.

वहां पहुंचने का एकमात्र रास्ता कोच था.

लेकिन सार्वजनिक कोचों में काले लोगों को जाने की अनुमति नहीं थी.

क्लारा के पास इतना पैसा नहीं था कि वो एक निजी कोच का खर्चा उठा सके.

लेकिन उसने बहाना बनाया कि वो ड्राइवर की नौकरानी थी.

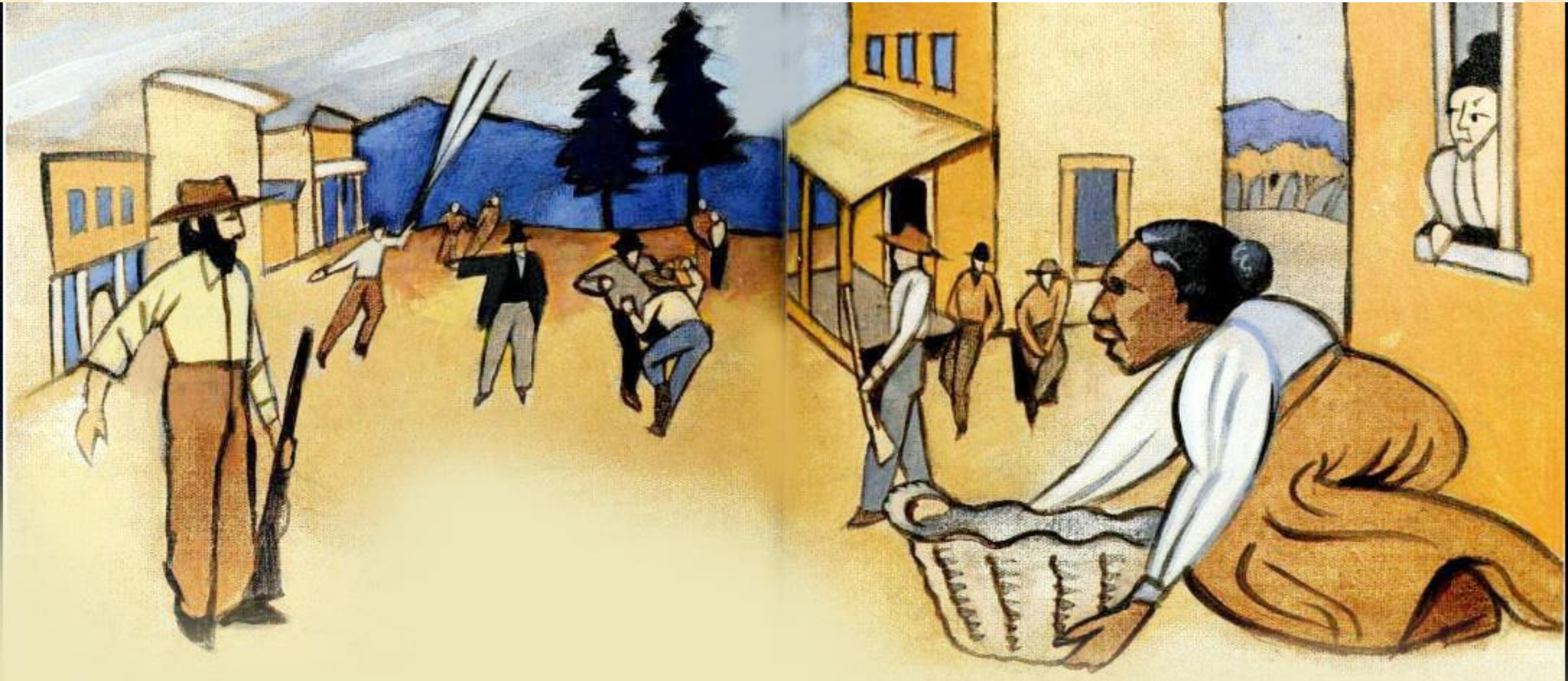
किसी को यह नहीं पता था कि उसने उसे सवारी के लिए ड्राइवर को पैसे दिए थे.

वो कानून तोड़ रही थी.

वो जेल जा सकती थी.

सौभाग्य से, क्लारा और उसके कपड़े धोने का टब सुरक्षित अपनी मंज़िल तक पहुँचे.





सेंट लुइस की गोदी में भीड़ और शोर था.

लेकिन "सेंट्रल सिटी", कोलोराडो की तुलना में वो बहुत शांत था.

"सेंट्रल सिटी“ में खनिक बंदूकें साथ रखते थे.

गली के कोनों में लोग हाथापाई करते थे.

चीख-पुकार और फायरिंग के बीच रात को सोना मुश्किल हो जाता था.

सोने की खोज ने लोगों को थोड़ा दीवाना बना दिया था.

फिर भी, क्लारा वहाँ आकर बहुत खुश थी.

कुछ ही दिनों में उसने अपनी एक दुकान खोल ली.

कोलोराडो में क्लारा ने एक लॉन्ड्री चलाई थी.

इतने साल एक गुलाम जैसे काम करने के बाद, क्लारा एक उत्कृष्ट लॉन्ड्री मजदूर बन गई थी.

सोने के खनिक उसके पास अपने कपड़े धुलवाने लाते थे.

जल्द ही वो हर कमीज के लिए 50 सेंट कमा रही थी.

उस समय वो बहुत ज़्यादा पैसा था.

1859 में, 50 सेंट से पांच डबलरोटियां खरीदी जा सकती थीं.

क्लारा ने जल्दी ही अपनी कमाई से और अधिक पैसा बनाना सीख लिया.

उसने डेनवर, बोल्डर और इडाहो स्प्रिंग्स, कोलोराडो में जमीन खरीदी.

उसने "सेंट्रल सिटी" में सात घर खरीदे.

कुछ ही वर्षों में, उसके पास 10,000 डॉलर की जमीन और पैसा था.

अब क्लारा ब्राउन अमीर बन गई थी.

फिर भी, वो हर दिन एलिजा जेन की खबर का इंतजार करती थी.



"सेंट्रल सिटी" में किसी को एलिजा जेन की खबर नहीं थी.

क्लारा की दोस्त बैकी को भी कोई खबर नहीं थी.

पर दुनिया की सारी दौलत भी क्लारा को अपनी बेटी को फिर से देखने जैसी ख़ुशी नहीं दे सकती थी.

जब क्लारा कोलोराडो में रह रही थी, तभी गृहयुद्ध शुरू हो गया था.

दक्षिणी राज्यों के लोग नहीं चाहते थे कि गुलाम आज़ाद हों.

उत्तरी राज्यों के लोग चाहते थे कि गुलामी खत्म हो.

दोनों तरफ के सैनिकों ने चार साल तक लड़ाई लड़ी.

1865 में, युद्ध समाप्त हुआ.

उसके तुरंत बाद, सभी गुलामों को मुक्त कर दिया गया.

क्लारा ने एक बार फिर अपनी बेटी की तलाश करने का फैसला किया.



वो कैंटकी जाएगी.

वहीँ पर एलिजा जेन का जन्म, गुलामी में हुआ था.

क्लारा को उम्मीद थी कि उसकी बेटी वहीँ पर होगी.



केंटकी

1866

क्लारा ने अपनी लॉन्ड्री बंद कर दी और वापस केंटकी की लंबी यात्रा की.

वहां अब सब कुछ बदल गया था.

गृहयुद्ध ने घरों और परिवारों को नष्ट कर दिया था.

कई बड़े वृक्षारोपण (प्लांटेशन) नष्ट हो गए थे.

जो लोग गुलाम थे, उन्हें पता नहीं था कि अब उन्हें काम कहाँ मिलेगा.

उनके पास न घर था और न पैसा.

उनमें से कुछ शिविरों में रह रहे थे, और अपने भविष्य के बारे में सोच रहे थे.

क्लारा कई मुक्त दासों से मिलीं.

उसने उन सभी से पूछा कि क्या वे एलिजा जेन नाम की किसी महिला को जानते थे.

उसने एक शहर से दूसरे शहर की यात्रा की.

वो एक शिविर से दूसरे शिविर में गई.

लेकिन उसे अपनी बेटी का कोई पता नहीं चला.



क्लारा खुद को बहुत अकेला महसूस कर रही थी.

एलिजा की कोई खबर न मिलने से उसका दिल टूट गया था.

अपने पूरे जीवन में, क्लारा का मानना था कि कठिन समय में भगवान ने ही उसकी मदद की थी.

इसलिए उसने भगवान से पूछा कि उसे क्या करना चाहिए.

क्लारा की प्रार्थनाओं ने उसे एक नया परिवार शुरू करने को प्रेरित किया.

वो क्लारा और एलिजा जैसे लोगों का परिवार होगा.

उसमें ऐसे लोग होंगे जो अपने माता-पिता या अपने बच्चों को नहीं ढूंढ पाए थे.



क्लारा ने अपने पैसे गिने.

उसके पास 26 नए मुक्त दासों को, अपने साथ कोलोराडो वापस लाने के लिए पर्याप्त पैसा था.

उनमें से कुछ उसके रिश्तेदार थे.

पर ज्यादातर अजनबी थे.



क्लारा के नेतृत्व में उसका नया "परिवार" एक वैगन ट्रेन में पश्चिम की ओर चला.

इस बार सभी का किराया चुकाया गया और सभी वैगनों में सवार हुए.

कोई भी पैदल नहीं चला.

1860 में, पूरे डेनवर में केवल 23 अश्वेत लोग थे.

ठीक छह साल बाद, क्लारा 26 लोगों के अपने "परिवार" के साथ वहां लाई.

उन आजाद गुलामों की खबर अखबारों में छपी.

अखबारों ने कहा कि गुलाम, कोलोराडो में गीत गाते और नृत्य करते हुए आए थे.

क्लारा ने प्रत्येक व्यक्ति को एक घर या जमीन का टुकड़ा दिया.

उसने उन्हें अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना सिखाया.

बदले में, उसके परिवार ने एलिजा जेन के बारे में अन्य लोगों से पूछ-ताछ की.



पर कुछ ही सालों में क्लारा का सारा पैसा ख़त्म हो गया.

कुछ चोर व्यवसायियों ने उसे धोखा भी दिया.

बाढ़ में उसने अपनी कुछ जमीन भी खो दी.

फिर भी, वो खुद को अमीर महसूस करती थी.

उसके पैसे से कई लोगों ने एक नया, मुक्त जीवन शुरू किया था.

लेकिन क्लारा अब बूढी हो रही थी.

अपना ख्याल रखने के लिए उसे अब पैसों की जरूरत थी.

जब पायनियर बूढ़े हो जाते, तो कोलोराडो राज्य उन्हें उनके काम बदले में, और जमीन बसाने (सेटल) के बदले में, पैसे देता था.

इन पैसों को पेंशन कहा जाता था.



1865 से पहले कोलोराडो में बसने वाला हर कोई व्यक्ति ऑफिशियल पायनियर होता था.

क्लारा वहां पर 1859 में आई थी.

लेकिन जब उसने अपनी पेंशन लेने की कोशिश की, तो उसे कुछ अजीबोगरीब नियम मिले.

किसी आधिकारिक पायनियर का गोरा होना ज़रूरी था.

और किसी ऑफिशियल पायनियर का पुरुष होना ज़रूरी था.

एक काली महिला को पायनियर पेंशन नहीं मिल सकती थी.

क्लारा अपनी दयालुता के लिए मशहूर थी.

उसने हमेशा उन लोगों की मदद की थी खासकर जो भूखे या बीमार थे.

या जिनकी त्वचा के रंग के कारण उनसे बुरा व्यवहार किया गया था.

हर कोई उन्हें "आंटी" क्लारा ब्राउन बुलाता था.

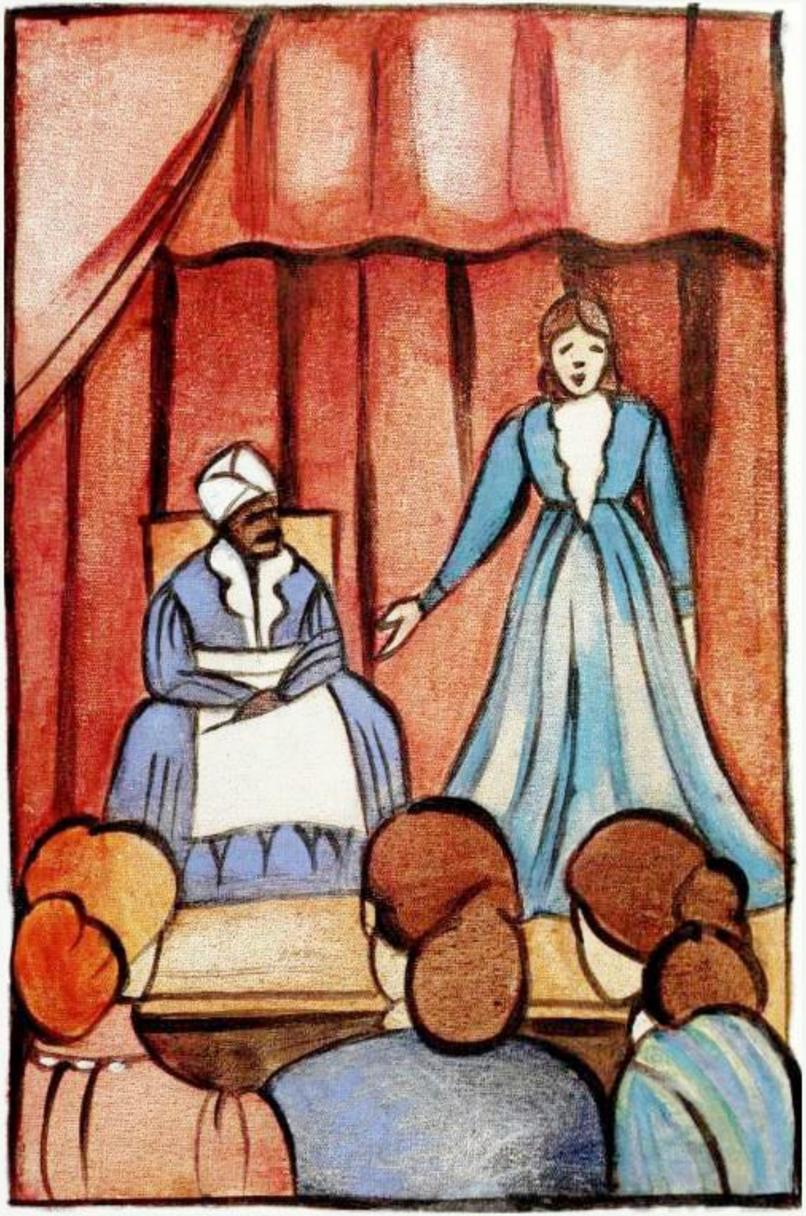
पर इस बार क्लारा ने लोगों से मदद मांगी.

क्लारा ने अपने दोस्तों से बात की.

लोगों को लगा कि क्लारा ने वहां इतना ज़रूर किया था जो कोलोराडो के किसी भी खनिक ने किया था.

फिर लोगों ने अखबारों को पत्र लिखे.

उन्होंने क्लारा की समस्या के बारे में सिटी हॉल में भाषण दिए.



उसके बाद नियम बदले गए.

आंटी क्लारा ब्राउन कोलोराडो की पहली आधिकारिक पायनियर बनीं जो गोरी नहीं थीं.

उन्हें वो पेंशन मिली जिसकी वो सच में हकदार थीं.





काउंसिल ब्लफ्स, आयोवा

1883

जब क्लारा 80 साल की थीं, तब उन्हें अपनी पुरानी दोस्त बैकी जॉनसन का एक पत्र मिला.

बैकी, आयोवा में जाकर बस गई थी.

धीरे-धीरे क्लारा अंधी होती जा रही थीं.

उन्हें बैकी की चिट्ठी पढ़ने के लिए आँखों पर काफी ज़ोर डालना पड़ा.



पोस्ट ऑफिस में बैकी की मुलाकात एक महिला से हुई, जिसका नाम एलिजा जेन था.

वो गुलाम थी.

जब वो 10 या 11 साल की थी, तब उसे उसकी मां से अलग कर दिया गया था.

एक क्षण के क्लारा का दिल रुक गया.

क्या वो उनकी बेटी हो सकती थी?

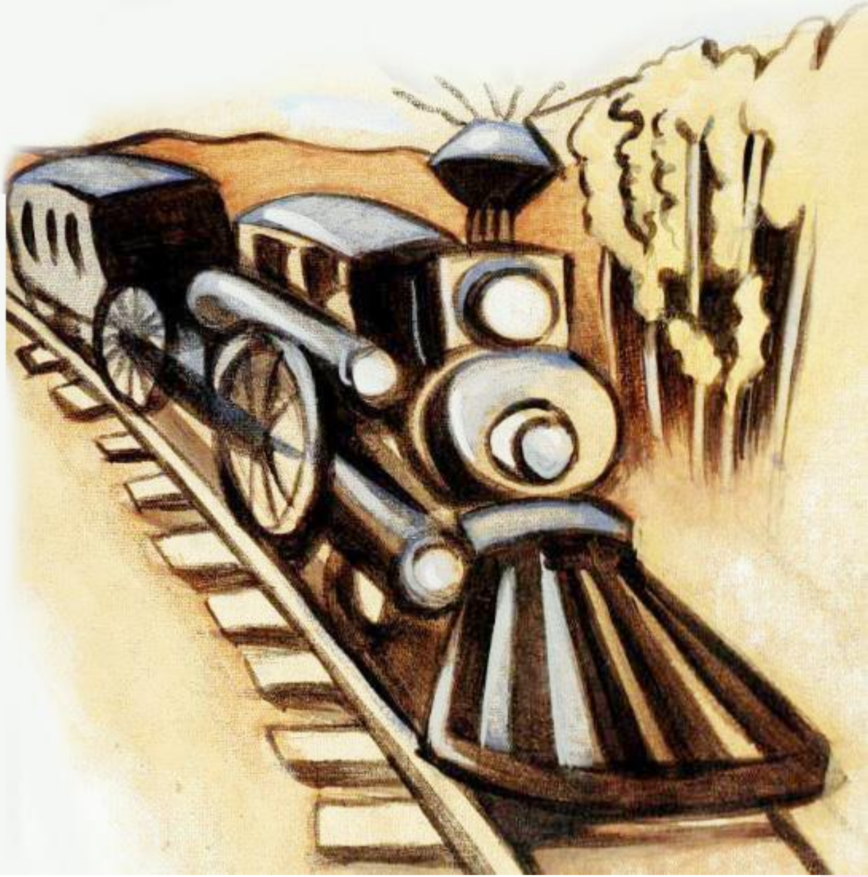
"तुरंत आओ," बैकी ने पत्र में लिखा था.

लेकिन क्लारा के पास यात्रा के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे.

क्लारा के दोस्तों ने खबर सुनी.

उन्होंने अखबार में लेख लिखे और उनकी यात्रा के पैसे इकट्ठे करने के लिए एक रात्रिभोज का आयोजन किया.

फिर वसंत के शुरू में, क्लारा, काउंसिल ब्लफ्स, आयोवा जाने वाली ट्रेन में चढ़ीं.





रास्ते में उनके दिमाग में 50 साल पहले वाले कैंटकी की याद तरोताज़ा हो रही थी.

उन्हें गुलाबी पोशाक पहने अपनी छोटी लड़की की याद आई, जो नीलामी के लिए मंच पर खड़ी थी.

एलिजा जेन इतनी डरी हुई थी कि उसने भीड़ के सामने उलटी कर दी.

इससे उसके मालिक बहुत नाराज हुए.

क्योंकि अगर वो बीमार दिखती तो मालिकों को उसके लिए कम पैसे मिलते.

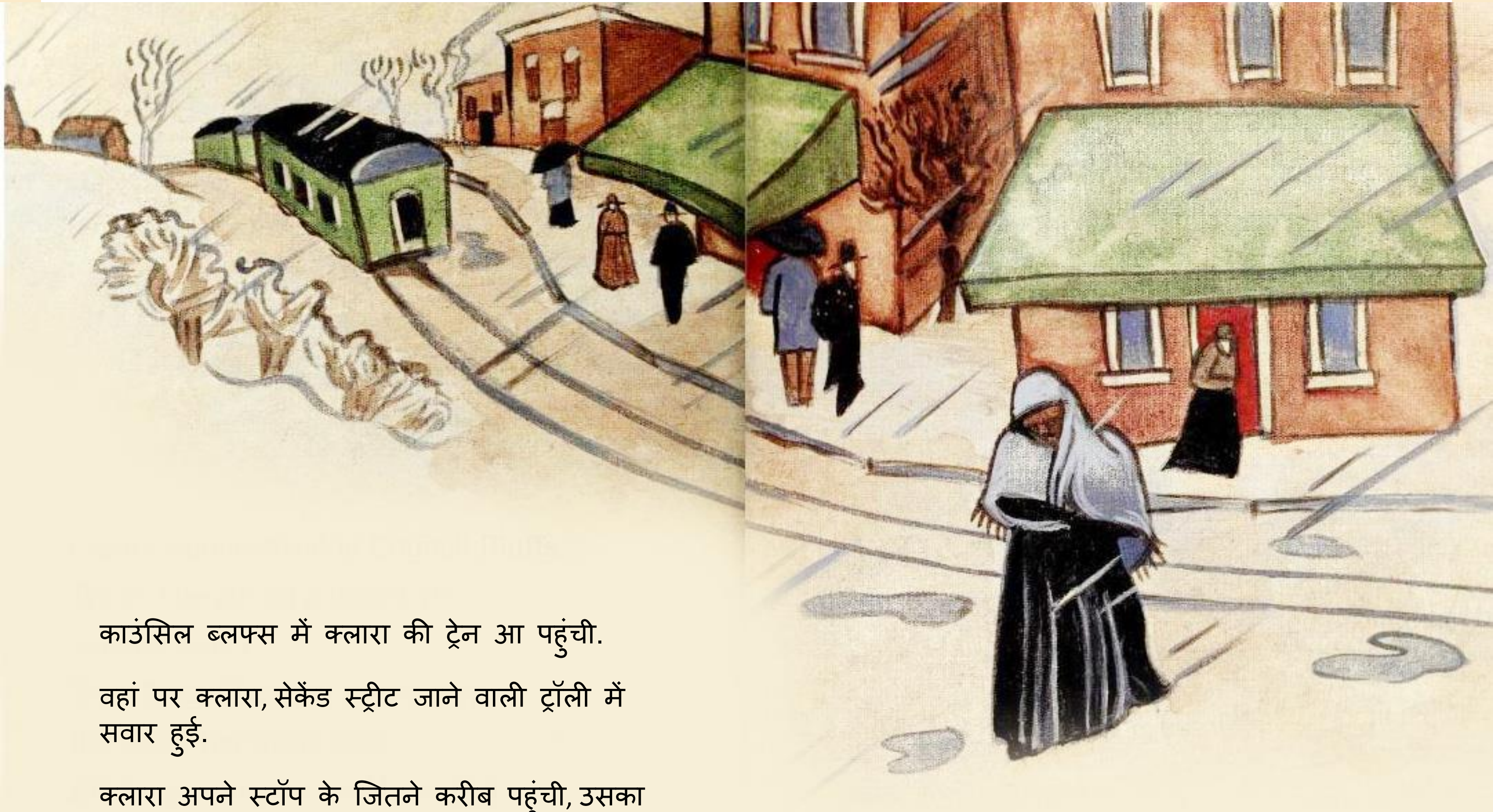
क्लारा उन सभी गोरे लोगों को दूर धकेलकर मंच पर पहुंचना चाहती थी.

वो अपनी छोटी बच्ची को वापस छीनना चाहती थी और उसे अपने कलेजे से लगाना चाहती थी.

उसके बजाए, एलिजा जेन को बेच दिया गया.

उसे कृषि उपकरण, फर्नीचर और अन्य गुलामों के साथ एक वैगन पर लाद दिया गया था.

क्लारा और एलिजा को आखिरी बार गले मिलने का भी मौका ही नहीं मिला था.



काउंसिल ब्लफ्स में क्लारा की ट्रेन आ पहुंची.

वहां पर क्लारा, सेकेंड स्ट्रीट जाने वाली ट्रॉली में सवार हुई.

क्लारा अपने स्टॉप के जितने करीब पहुंची, उसका दिल उतनी ही तेजी से धड़कने लगा.

बाकी सभी यात्री देख सकते थे कि क्लारा घबराई हुई थी.

यात्रियों ने सुनिश्चित किया कि क्लारा सही स्टॉप पर उतरे.

क्लारा जब ट्रॉली से उतरी तो मार्च की तेज हवा बह रही थी.

सर्द हवा से उसकी आँखें मिचमिचाने लगीं.



उसने देखा कि सड़क पर पानी के गड्ढों में से एक ऊंची, काली औरत उसकी ओर दौड़ रही थी.

अचानक, क्लारा को डर लगने लगा.

क्या होगा, अगर वो अपनी बेटी को नहीं पहचान पाई?

इतने साल हो गए थे, इतने साल!

दौड़ती महिला धीमी हुई और फिर वो क्लारा के करीब आई.

शुरू में क्लारा सिर्फ उसकी नाक और मुस्कान देख पाई.

महिला ने एक और शर्मीला कदम आगे बढ़ाया.

तब तक क्लारा उस महिला के काफी करीब थी और उसे अपनी आँखों से करीबी देख सकती थी.

वे वही प्यारी भूरी आँखें थीं जिन्हें क्लारा कभी नहीं भूल पाई थी.

उसका दिल उछलने लगा.

सौ साल बीत जाने पर भी वो अपनी नन्ही सी बच्ची को कहीं भी पहचान लेती.

क्लारा ने अपनी बाहें खोल दीं.

एलिजा जेन, क्लारा के गले लग गई.

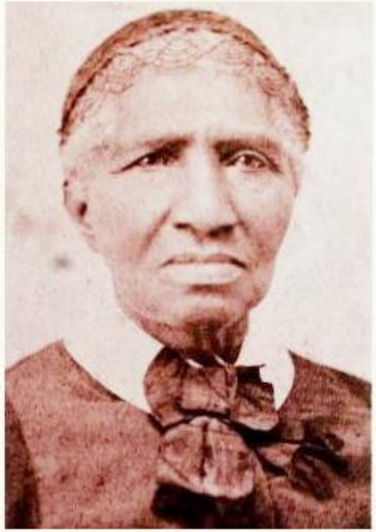
क्लारा अब खुद को दुनिया की सबसे अमीर महिला महसूस कर रही थी.

वो फिर से अपनी बेटी एलिजा जेन को, अपनी बाहों में पकड़े हुए थी.

और इस बार, वो उसे कभी भी जाने नहीं देगी.



अंत के शब्द



अगस्त 1885 में, पायनियर एसोसिएशन की एकमात्र महिला सदस्य आंटी क्लारा ब्राउन के लिए डेनवर में एक भोज आयोजित गया था. सैकड़ों लोग उन्हें बधाई देने आए : व्यवसायी जो कभी गुलाम थे, धनी ज़मींदार, पुराने दोस्त, यहाँ तक कि डेनवर के मेयर भी.

लेकिन एक घटना ने इस पल को क्लारा के लिए सबसे खुशनुमा बना दिया. एलिजा जेन अपनी मां से मिलने के बाद कोलोराडो में रहने आ गई थी. जैसे ही क्लारा ने अपने व्हीलचेयर में अपना पायनियर पुरस्कार स्वीकार किया, एलिजा जेन उनके एक तरफ खड़ी थी और क्लारा की पोती दूसरी तरफ खड़ी थी.

दो महीने बाद, लगभग 83 वर्ष की आयु में, डेनवर में अपने छोटे से व्हाइट हाउस में आंटी क्लारा ब्राउन की मृत्यु हुई. इतने सारे लोग उनसे प्यार करते थे. वे सभी बारी-बारी से उनके बिस्तर के चारों ओर गाना गाते हुए गए - क्योंकि वहां सभी के खड़े होने के लिए पर्याप्त जगह नहीं थी.

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1802—क्लारा का जन्म वर्जीनिया में गुलामी में हुआ. (उनकी सही जन्म तिथि अनिश्चित है.)

1805—उन्हें केंटकी में जॉर्ज ब्राउन नाम के एक व्यक्ति को, दास के रूप में बेचा गया

1820—एक साथी गुलाम रिचर्ड ब्राउन से शादी की

1826—बेटी एलिजा जेन का जन्म

1836—एलिजा जेन को एक अलग मालिक को बेचा गया

1856—क्लारा ने अपनी स्वतंत्रता खरीदी

1859—कोलोराडो में आगमन

1859-1865—ज़मीन खरीदी और खूब कमाई की

1865—एलिजा जेन की तलाश में केंटकी गईं

1866—मुक्त दासों को कोलोराडो लायीं

1881— केंटकी में पायनियर पेंशन मिली

1883—एलिजा जेन के साथ दुबारा मिलीं

1885—डेनवेर में आंटी क्लारा ब्राउन के सम्मान में भोज आयोजित किया गया

1885—आंटी क्लारा ब्राउन का कोलोराडो में निधन